ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No. :UPBIL04292,
RNI REG. No.: UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No.: 561/2013-14 Vol.-5, No.-II, PP-181-183,YEAR- DEC.2016

कुक्कुट पालन : एक लाभकारी व्यवसाय है

❑ डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहॉ पर लगभग 75% से अधिक आबादी के जीविकोपार्जन का स्त्रोंत मुख्यतः कृषि एंव पशुपालन है। मनुष्य के आर्थिक,सामाजिक,शारीरिक तथा मानसिक विकास हेतु उच्च पोषण युक्त भोजन एंव आमदनी का होना नितान्त आवश्यक है। इसके विकास में कुक्कुट एंव उत्पादन की अहम भूमिका है। कुक्कुट पालन धीरे–धीरे बहुत लोकप्रिय होता जाा रहा है। पर्यापत जानकारी तथा सावधानी के साथ यदि यह व्यवसाय को प्रारम्भ किया जाए तो इससे अच्छा धन कमाया जा सकता है।

ग्रामीण,शहरी व छोटे तथा बड़े स्तर के कुक्कुट पालक को अल्प समय में स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने का एक बेहतर विकाल्प है। अल्प समय में उत्पादन क्षमता,अतिशीघ्र शारीरिक बढ़ोतं तरी तथा कम आहार में उत्पादन क्षमता इनकी विशेषता है। कुक्कुट पालन व्यवसाय में कम लागत एंव कम समय में अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है।

भारत में ग्रामीण क्षेत्र में कुपोषण एंव गरीबी को दूर करने के लिए पारंपरिक मुर्गी पालन बैकयार्ड मुर्गी पालन के रूप में प्राचीन काल से ही प्रचलित है। ये ग्रामीण क्षेत्र में लोगों के लिए उच्च गुणवत्ता का प्रोटीन का स्त्रोंत है तथा मांस व अंडा बेच कर परिवार को कुछ आमदनी भी प्राप्त हो जाती है। ये ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने का उत्तम साधन बन गया है। आज मुर्गी पालन एक संगठित उद्योग का रूप ले चुका है।

स्थान एंव आवास व्यवस्था– इस व्यवसाय को शुरू करने के लिए मुर्गियो ं के रहने के लिए समुचित स्थान की व्यवस्था करनी चाहिए। स्थान का चुनाव ऐसी जगह करना चाहिए जहॉ धरातल ऊॅचा हो तराई वाले क्षेत्र जहॉ पानी भर जाता हो इस कार्य के लिए अच्दे नहीं माने जाते है। यातायात की पूरी व्यवस्था हो तथा वहॉ पर शोरगुल न होता हो। इनके लिए आवास उनके आराम,सुरक्षा,अच्छे उत्पादन एंव सुविधा के लिए अति आवश्यक है। जो उनके लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान कर सकें तथा उनको परभक्षियो तथा विपरीत मौसम से सुरक्षा भी प्रदान कर सकें।

स्थान की मिट्टी उपाजाऊ दोमट मिट्टी जो पानी को शीघ्र शोख ले जिससे कीचड़ न हो पाए। वातायन विद्युत व जल आपूर्ति की पर्याप्त सुविधा होनी चाहिए। भूमि क्षेत्र की उपलब्धता,उसकी स्थिति, आराम, उनकी व्यवस्था तथा उनको रोग से मुक्त रखना इत्यादि बातों को ध्यान में रखते हुए मुख्य तीन विधियों का प्रयोग किया जाता है।

1. Extensive System (विस्तृत विधि)
2. Semi-Extesive System (अर्थ सघन विधि)
3. Intensive System (सघन विधि)

प्रथम विधि मे ं पक्षियों को खुले वातावरण मे चरने के लिए छोड़ दिया जाता है। इनकों अधिक वर्षा, हवा, सूर्य की गर्मी से बचाने के लिए दीवार, चौकियां, या वृक्षारोपण का होना आवश्यक है। इसमें प्रति मुर्गि 80 वर्ग मी0 स्थान की आवश्यकता होती है। रात्रि में विश्राम के लिए दड़बा बनाया जाता है। यह विधि ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा उपयोगी होता है। दिन मे मुर्गियों को बाहर छोड़ देते है। जिससे वे गृह वाटिका, आंगन, पशुबाड़ा, सड़क ,खेत आदि स्थानों पर विचरण करती रहती है। रात्रि विश्राम के लिए स्थाई या अस्थाई (Portable) दोनों प्रकार के दड़बे बनाये जा सकते है। दूसरी विधि,पहली विधि से अच्छी मानी जाती है। क्योकि इनमें मुर्गियों को घेरे के अन्दर पालते है। इस विधि से पाली गयी मुर्गियॉ अधिक मजबूत चंचल तथा विभिनन मौसम को सहन करने वाली होती है।

अधिक घास पैदा होने वाले मौसम जैसे वर्षा ऋतु में मॉस वाले पक्षियों का उत्पादन निःशुल्क हो

❑ एसोसिएट प्रोफेसर– पशुपालन एंव दुग्ध विज्ञान विभाग श्री मुरली मनोहेर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया (उ0प्र0), भारत

जाता है। ये कम खर्च तथा कम मेहनत वाली विधियॉ है। किन्तु व्यावसायिक दृष्टि से अधिक अण्डा देने वाली मुर्गियों के लिए यह विधि उपयुक्त नहीं होती क्योकि उनकी अधिकांश ऊर्जा घूमने फिरने मे ं नष्ट हो जाती है। तीसरी विधि को डीप लिटर विधि भी कहते है। इस विधि में मुर्गियों को रखने के लिए प्रति मुर्गि 0.225 वर्ग मी0 से 0.27 वर्ग मी0 स्थान की आवश्यकता पड़ती है। कुक्कुट शाला कच्ची अथवा पक्की बनाई जा सकती है। इसकी बाहरी दीवार पृथ्वी के धरातल से 0.75–0. 90 मी0 ऊॅची रखना चाहिए। इसके ऊपर 1.05–1.20 मी0 की खिड़कियॉ लगाना चाहिए खिड़कियो पर जाली लगाना देना चाहिए छत डालने के लिए एस्बेस्टास चादरों का प्रयोग किया जाता है। दोनो ओर 90 सेमी0 चादरे बाहर की ओर निकली रहें। फर्श पर प्रारम्भ में 7.5–10 सेमी0 बिछावन डालना चाहिए विछावन के लिए धान का पुवाल,भूसा,लकड़ी का बुरादा सूखी घास,गन्ने की खोई, सूखी पत्तियॉ,धान की भूसी,मूॅगफली के छिलके आदि का प्रयोग करना चाहिए। चूजे के बड़े हो जाने पर विछावन की ऊचाई पर दीवार के सहारे पानी पीने की नाली बनवाते है। दूसरी ओर अण्डे देने के लिए लकड़ी के बाक्स की व्यवस्था करनी पड़ती है। कुक्कुट शाला का दरवाजा उत्तर की ओर रखा जाता है। राम में पक्षियों के बैठने के लिए फर्श से लगभग 60 सेमी0 की ऊचाई पर लकड़ी के पतले तख्ते या डण्डे लगवाना चाहिए।

पक्षियों की व्यवस्था करना– अपने फार्म के लिए किसी अच्छे फार्म से दोगली नस्ल की मुर्गियों के ऐक दिन के चूजों को खरीदना चाहिए। पक्षियों को कोई बीमारी नहीं होनी चाहिए। अण्डा उत्पादन के लिए सबसे अच्छी नस्ल वाली सफेद मुर्गी व्हाइट लेग हार्न नस्ल के चूजों को लाना चाहिए मॉस उत्पादन के लिए असील, कोर्निस, न्यूहेम्दशायर, चरगॉव आदि नस्ले उपयुक्त है। मुर्गी पालन के लिए हमेशा अच्छी, रोगमुक्त पक्षियों का चुनाव करना चाहिए। उन्नत नस्ल की मुर्गियॉ वर्ष भर में लगभग 250–300 अंडे देती है। जबकि देशी केवल 50–60 अंडे ही दे पाती है। व्यवसाय के लिए हमेशा उन्नत नस्ल की मुर्गियों का चुनाव करना चाहिए। विभिन्न नस्लों में से पक्षियो की व्यवस्था ध्यान में रखकर निम्नानुसार करना चाहिए–

1. अधिक मॉस देने वाली– कार्निस ऊसील, न्यूहेम्पशायर, व्हाइट राक, कड़कनाथ आदि
2. अधिक अंडे देने वाली– व्हाइट लेग हार्न,मिनाकी
3. मॉस व अंड़ा दोनो के लिए–रोड आइलेण्ड रेड,आस्ट्रा लार्श आदि ।

आहार व्यवस्था – अच्छे उत्पादन स्वास्थ व लाभ के लिए मुर्गीयों को समुचित तथा संतुलित आहार देना चाहिए। उनके आहार मे कार्बोहाइड्रेट,फैट,प्रोटीन,खनिज पदार्थ,विटामिन्स तथा पानी आदि पोषक तत्व उचित मात्रा अनुपात में मिलान चाहिए। उनका राशन ज्वार, बाजरा, दला हुआ मक्का, चोकर, मूंगफली की खली, सलाद, पालक, चौलाई, गोभी आदि की पत्तिया आदि दे सकते है। प्रत्येक चूजे को शुरू मे लगभग 30 ग्राम राशन की आवश्यकता पड़ती है। धीरे–धीरे यह आवश्यकता बढ़कर 120 ग्राम तक हो जाती है। बाजार से भी मिश्रण खरीदकर खिलाया जा सकता है। मॉस उत्पादन के लिए ब्रायलर को 50 दिन में 2 किलों शरीर भार तक पहुचाने में लगभग 4

किलों आहार की आवश्यकता पड़ती है। आहार खिलाने के लिए फीडर,पानी के लिए वाटरर की आवश्यकता पड़ती है। जिन्हे बिछावन से 12.5–15 सेमी ऊॅचाई पर लटका देना चाहिए खाली हो जाने पर उनमे पुनः राशन भर दिया जाता है। ब्रायलर स्टार्टर राशन प्रथम 4 सप्ताह तक तथा फिनिशर राश्ज्ञन बेचने तक दिया दिया जाता है।

बीमारीयॉ व बचाव– प्रारम्भ से ही यदि इनकी रोकथाम का उचित प्रबन्ध न किया जाए तो सारी मुर्गियॉ 2–3 दिन में मर कर पूरे व्यवसायव को चौपट कर देती है। उचित देखभाल,संतुलित आहार,साफ व

हवादार आवास तथा साथ ही अच्छी नस्ल की उन्नत मुर्गी का चुनाव करने से बीमारी की संभावना बिल्कुल कम हो जाती है। समय पर बचाव के टीके लगवाना चाहिए। मुर्गियों में रानीखेत, चेचक, फाउल पाक्स तथा फाडल कालरा जैसी छूत की बीमारियों का प्रकोप बहुत शीघ्र हो जाता है। इनसे ग्रसित होने के बाद उनका

बचाव करना कठिन हो जाता है। प्रारम्भ से सावधान रहना पड़ता है।

इन बीमारियों के अतिरिक्त कोराइजा सदी जुकाम काक्सी डियोंसिस, पक्षघात जैसी बीमारियॉ भी होती है। इन बीमारियो ं से बचाव हेतु मुर्गियों को टेरामाइसीन घुलनशील पाउडर,सल्फाडिमीडीन 16 प्रतिशत घोल तथा विटामिन A ,D और B युक्त औषधियॉ समय–समय पर देते रहना चाहिए। प्रतिमाह पेट के कीड़े मारने वाली दवा पिलानी चाहिए। जिसके लिए वर्मेक्स,बरबन तथा जिपराजीन युक्त कृमिनाशक औषधियॉ प्रयोग की जाती है। बाहय परिजीवी को मारने के लिए राख में गेमेक्सीन अथवा डी0डी0टी0 मिलाकर पंखों पर मलना चाहिए।

पालन–पोषण एंव अन्य देखभाल– ठीक प्रकार से पाली व पोषित जाने वाली मुर्गियॉ पहले वर्ष में80–85: अण्डे देती है। अगले आने वाले वर्षो मे अण्डे उत्पादन की क्षमता कम हो जाती है। एक मुर्गी वर्ष भर मे 200 से 250 अण्डे दे सकती है। अण्डों का औसत उत्पादन 60: से कम हो जाने पर इन मुर्गियों को हटा कर नई मुर्गियॉ रखनी चाहिए। व्यवसाय के रूप में 1000 से कम मुर्गियॉ रखना लाभदायक नहीं होता। अण्डे देने वाली मुर्गियों के साथ–साथ ब्रायलर पालन करने से और अधिक लाभ कमाया जा सकता है। शुरू में इस व्यवसाय को छोटे रूप में प्रारम्भ करना चाहिए फिर धीरे–धीरे बढ़ाना चाहिए। पहले मुर्गी घर उपकरण तथा चारा–दाना का प्रबंध कर लेना चाहिए। मुर्गियों से अधिकतम लाभ लेने के लिए समुचित प्रकाश तथा ताप कम की भी आवश्यकता पड़ती है। सूर्य के अभाव में 40–60 वाट का बल्ब कुक्कुट शाला में लटका कर यह कमी पूरी की जा सकती है । कुक्कुट शाला का तापमान 650F से 800F के बीच तथा आर्द्रता 70% या अधिक होन पर अण्डा उत्पादन सर्वाधिक होता है। पीने के लिए ताजे पानी की व्यवस्था होनी चाहिए। पानी में सप्ताह में एक दो बार हल्का पोटाश परमैग्नेट घोल मिला देने से इससे फैलने वाले रोगों में कमी हो जाती है। कम पानी पिलाने पर उत्पादन कम हो जाता है। चूजे बहुत कोमल व नाजुक होते है। उनके पालन पोषण मे विशेष सावधानी की आवश्यकता पड़ती है। छोटे चूजों की बढ़ोतरी के लिए उचित देखभाल व पर्याप्त गर्मी के इंतजाम की आवश्यकता पड़ती है। उनको पर्याप्त गर्मी, हवा, नमी, की भी आवश्यकता होती है।